HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II [History of India (1526-1947 AD)]

UNIT-III, (BATTLE OF PLASSEY)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 42

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें □□□

https://youtu.be/mKb5uE-DZlw

" बंगाल में अंग्रेजी शक्ति का उदय : प्लासी का युद्ध "

(Rise of the British power in Bengal: Battle of Plassey)

Or,

" प्लासी के युद्ध के कारण एवं परिणाम "

(Causes and consequences of Battle of Plassey)

" भारतीय इतिहास की वह युगांतरकारी युद्ध जिसके फलस्वरूप भारत 200 वर्षों तक गुलाम रहा।"

आरंभ में बंगाल मुगल साम्राज्य का अंग था। 1701 ई. में मुर्शिद अली खां बंगाल का दीवान नियुक्त हुआ। वह अपनी कुशलता से 1713 ई. में बंगाल का सूबेदार बना।

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

उसने बंगाल की राजधानी मुक्साबाद बनाई जिसका नाम मुर्शिदाबाद पड़ा। 1725 ईस्वी में मुर्शीद अली खां की मृत्यु हो गई| उसके बाद शुजाउदीन खा बंगाल का सूबेदार हुआ| 1739 में शुजाउद्दीन खान की मृत्यु हो गई और उसके बाद अलिवर्दी खां बंगाल का नवाब हुआ| अलीवर्दी खां एक योग्य तथा कुशल शासक था| यद्यपि उसे निरंतर मराठों के आक्रमणों का सामना करना पड़ा फिर भी उस के शासनकाल में अपेक्षाकृत शांति बनी रहे| अलीवर्दी खां के मृत्यु के बाद उसका नाती सिराजुदौला 1756 ईस्वी में बंगाल का नवाब बना| सिराजुदौला अदूरदर्शी एवं स्वाभिमानी व्यक्ति था| अतः राज्याभिषेक के शीघ्र बाद उसे विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा| इस प्रकार सिराजुद्दौला का अंग्रेजों के साथ संघर्ष शुरू हो गया| जो कालांतर में प्लासी के युद्ध में तब्दील हो गया|

@ प्लासी के युद्ध के कई महत्वपूर्ण कारण थे। जो इस प्रकार है –

1. राजनीतिक कारण – सिराजुद्दौला अपनी शक्ति का व्यावाहरिक प्रयोग करना चाहता था। वह बंगाल को षड़यंत्रों से बचाना चाहता था। वह बंगाल के गद्दी के दावेदारों को पहले ही नष्ट कर देना चाहता था। इसी उद्देश्य से उसने घसीटी बेगम एवं शौकत जंग के खिलाफ कार्रवाई कर उनके विद्रोह को शांत किया। सिराजुद्दौला को षड्यंत्र में उलझा देखकर अंग्रेज उसकी आज्ञा की अवहेलना करने लगे , क्योंकि अंग्रेजों के राजनीतिक प्रभुत्व के विस्तार में सिराजुद्दौला बाधा उत्पन्न कर रहा था। ऐसी अवस्था में दोनों के बीच संघर्ष होना स्वाभाविक था।

2. नवाब के प्रति अंग्रेजों के व्यावहार – बंगाल के नये नवाब सिराजुद्दौला के प्रति अंग्रेजों का व्यावहार अवज्ञा एवं उपेक्षा का था। प्रारंभ में तो अंग्रेज विनित और आज्ञाकारी प्रजा की तरह व्यवहार करते थे। लेकिन कालांतर में वे नवाब को अपमानित करने लगे। प्राचीन परंपरा के अनुसार नवाब के गद्दी पर बैठने के समय सभी को दरबार में उपस्थित होकर उपहार देना पड़ता था। परन्तु अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला के राज्याभिषेक के समय कोई उपहार भेंट नहीं की। अंग्रेजों ने नवाब को

Dr Sudhir Kumar (A.N.D College)

कासिम बाजार की कोठी में भी आने से रोक दिया था। इस प्रकार राज्य में एक विदेशी शक्ति की उपेक्षा पूर्ण नीति नवाब के लिए असहनीय हो गया।

3. अंग्रेजों द्वारा अधिकारों का दुरूपयोग – राज्य के कानून और नवाब के आज्ञा के अनुसार अंग्रेजों को बंगाल एवं कलकत्ता में किला बंदी करने का कोई अधिकार नहीं था किंतु अंग्रेजों ने अधिकार का दुरुपयोग कर किला का निर्माण किया जो संघर्ष का मुख्य कारण था।

4. व्यपारी सुविधा की अवहेलना– अंग्रेज व्यापारी शाही फरमान द्वारा मिली सुविधा का, जिसको दस्तक कहते थे, दुरुपयोग कर रहे थे और चुंगी दिये बिना ही व्यापार कर रहे थे। वे देसी व्यापारियों को दस्तक देकर नि:शुल्क व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। इससे नवाब को आर्थिक क्षति हो रही थी।

5. नवाब के विरोधियों को अंग्रेजों द्वारा संरक्षण –अंग्रेजो ने नवाब के कुछ विरोधियों को अपने यहां संरक्षण दी। जब नवाब ने उन्हें वापस मांगा तो इन्होंने इंकार कर दिया। जिससे नवाब इन विदेशियों से क्षुब्ध हो गया।

6. कलकत्ता पर आक्रमण:– जब नवाब के आदेश की अवहेलना कर अंग्रेजों ने कोलकाता की किला बंदी जारी रखी, तो नवाब ने दंड देने के लिए कासिम बाजार की कोठी पर 4 जुन 1756 ई. को अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने कोलकाता पर आक्रमण कर दिया। घबड़ाकर अंग्रेजों ने फुल्टा नामक द्विप में भाग कर शरण ली। बहुतों ने आत्मसमर्पण कर दिया और बहुत से गिरफ्तार भी हो गए।

7. काल कोठरी की घटना – हांलवेल के मतानुसार, 18 फीट लंबी 14 फुट 10 इंच चौड़ी एक कोठरी में 146 अंग्रेज जुन की प्रचंड गर्मी के बावजूद बंद कर दिए गये। सुबह होते होते उनमें सिर्फ 23 जीवित बचे। इसे इतिहास में काल कोठरी की संज्ञा दी गई।

8. कलकत्ता पर अंग्रेजों का पुन: अधिकार:– जब कलकत्ता के विनाश की सूचना मद्रास पहुंची तो वहां के अंग्रेज पदाधिकारी प्रतिशोध की भावना से जल उठे। उन्होंने

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

क्लाइव तथा वाटसन के नेतृत्व में क्रमश: एक स्थल सेना तथा जल सेना बंगाल भेजें, जिसने शीघ्र ही कोलकाता पर अधिकार कर लिया| विवश होकर सिराज को अलीनगर की संधि करनी पड़ी| इस संधि के अनुसार अंग्रेजों की पुरानी व्यापारिक सुविधाएं लौटा दी गई और क्षतिपूर्ति के लिए हर्जाना दिया गया| मुद्रा निर्माण एवं किलाबंदी का भी उन्हें अधिकार मिल गया|

9. सिराज के विरुद्ध षड्यंतत्र:– अलीनगर की संधि के द्वारा अंग्रेजों तथा नवाब के बीच संघर्ष का अंत नहीं हो सका| क्लाइव ने सिराज को पदच्युत करने तथा उसके बहनोई मीर जाफर को नवाब बनाने का षड्यंत्र रचा| उसने नवाब के विद्रोही दरबारियों के साथ मिलकर एक गुप्त संधि कर ली| नवाब का कोषाध्यक्ष राय दुर्लभ, सेनापति मीर जाफर, बंगाल का सबसे संपन्न बैंकर जगत सेठ इस षड्यंत्र में शामिल थे।

 # प्लासी का युद्ध (23 जुन 1757) का आरंभ:– जब षड्यंत्र पूरा हो गया तो क्लाइव ने नवाब पर अलीनगर की संधि भंग करने का आरोप लगाया और शीघ्र ही एक सेना के साथ कोलकाता कुच किया| 23 जून 1757 ई. के प्रभात से प्लासी के आम्र उपवन में सिराजुद्दौला की सेना और कंपनी की सेना में मुठभेड़ शुरू हुई| जिसे भारत के इतिहास में प्लासी के युद्ध के नाम से जाना जाता है| अपने दरबारियों के धोखेबाजी के कारण सिराजुद्दौला युद्ध हार गया और युद्ध क्षेत्र से अपने पत्नी लुत्फनिशा और नौकर के साथ भाग गया| अंत में मीर जाफर के बेटे मीरन द्वारा उसकी सपरिवार हत्या कर दी गई

 # प्लासी के युद्ध के परिणाम और महत्त्व :–

प्लासी की लड़ाई में विजय पाते ही अंग्रेजों ने मीरजाफर को बंगाल का नवाब घोषित किया|

कंपनी को 24 परगना की जमींदारी और कोलकाता के दक्षिण 880 वर्ग मील भूभाग मिले, जिनसे लगान के रूप में डेढ़ लाख पौंड की आमदनी होती थी|

Dr Gudiya Kumari (A.N.D College)

एक आधुनिक लेखक ने लिखा है कि "1757 ई. भारतीय इतिहास के लिए एक युगांतकारी तिथि है| क्योंकि इस वर्ष उसने नया मोड़ लिया| इसके फलस्वरुप भारत में अंग्रेजो का प्रभाव बढ़ गया साथ ही अंग्रेजी साम्राज्य की नींव भी पड़ गयी।"

आर्थिक दृष्टि से भी प्लासी का युद्ध अंग्रेजो के लिए अधिक लाभकारी सिद्ध हुआ|

व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से भी प्लासी का युद्ध कंपनी के कर्मचारियों के लिए वरदान साबित हुआ| अतः वास्तव में नैतिक दृष्टि से प्लासी का युद्ध विश्वासघात की विजय थी|

THANKS

Dr Guddy kumari (A.N.D College)